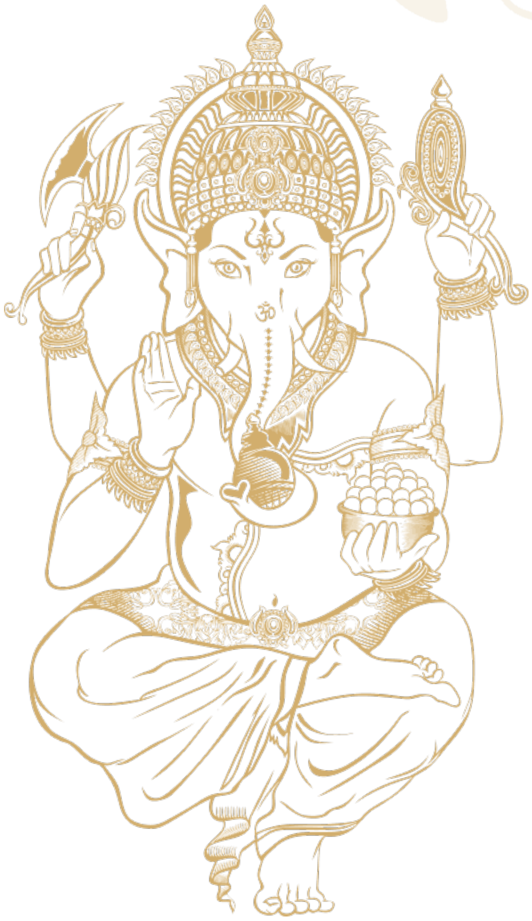

AKSHIT JAIN

ANU JAIN

Model: Web-Milan-Phal

Order No: 121510801

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
13/07/1994	जन्म तिथि	23/03/1998
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 12:55:00	जन्म समय	19:25:00 घंटे
घटी 18:27:17	जन्म समय(घटी)	32:36:32 घटी
India	देश	India
New Delhi	स्थान	New Delhi
28:36:50 उत्तर	अक्षांश	28:36:50 उत्तर
77:12:50 पूर्व	रेखांश	77:12:50 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:09	स्थानिक संस्कार	-00:21:09 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:32:05	सूर्योदय	06:22:23
19:21:17	सूर्यास्त	18:33:45
23:47:05	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:50

Header row middle: लिंग

तुला	लग्न	कन्या
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	बुध
सिंह	राशि	मकर
सूर्य	राशि-स्वामी	शनि
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
3	चरण	4
वरियान	योग	शिव
बालव	करण	विष्टि
टी-टीकम	जन्म नामाक्षर	जी-जीविका
कर्क	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	वैश्य
वनचर	वश्य	जलचर
मूषक	योनि	नकुल
मनुष्य	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
श्वान	वर्ग	सिंह

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 7वर्ष 11मा 23दि		02:00:40	तुला	लग्न	कन्या	20:57:58	सूर्य 1वर्ष 5मा 28दि	
राहु		26:54:09	मिथु	सूर्य	मीन	08:54:00	राहु	
05/07/2025		21:20:48	सिंह	चंद्र	मक	06:40:49	19/09/2016	
06/07/2043		12:49:31	वृष	मंगल	मीन	20:42:41	20/09/2034	
राहु	18/03/2028	07:26:01	मिथु	बुध	मीन	26:30:33	राहु	02/06/2019
गुरु	11/08/2030	11:10:13	तुला	गुरु	कुंभ	17:25:12	गुरु	26/10/2021
शनि	17/06/2033	08:31:06	सिंह	शुक्र	मक	22:29:39	शनि	01/09/2024
बुध	05/01/2036	18:17:14	कुंभ व	शनि	मीन	26:53:41	बुध	21/03/2027
केतु	22/01/2037	28:08:04	तुला व	राहु	सिंह	16:33:47	केतु	08/04/2028
शुक्र	23/01/2040	28:08:04	मेष व	केतु	कुंभ	16:33:47	शुक्र	09/04/2031
सूर्य	17/12/2040	00:43:59	मक व	हर्ष	मक	17:42:34	सूर्य	02/03/2032
चन्द्र	17/06/2042	28:12:54	धनु व	नेप	मक	07:51:29	चन्द्र	01/09/2033
मंगल	06/07/2043	01:38:31	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:11:23	मंगल	20/09/2034

23:47:05 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:50

लग्न-चलित

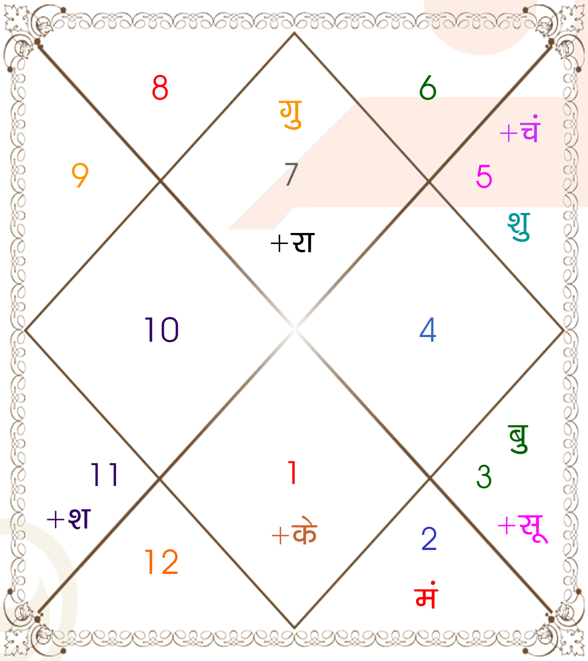

लग्न-चलित

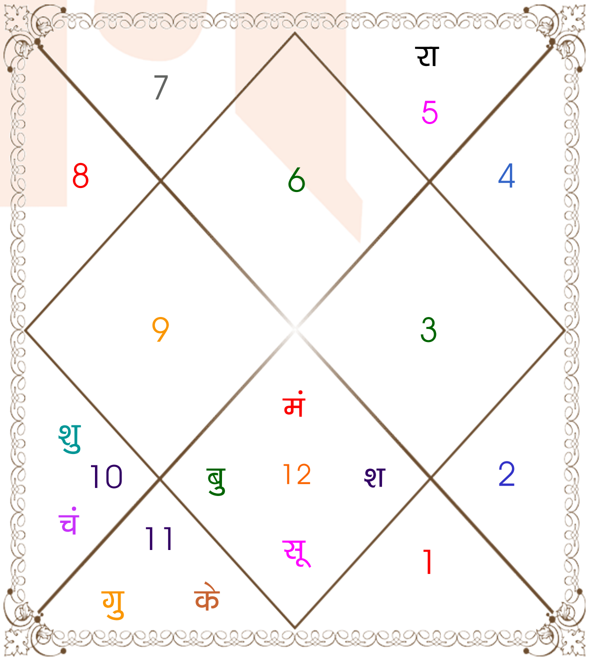

चन्द्र कुंडली

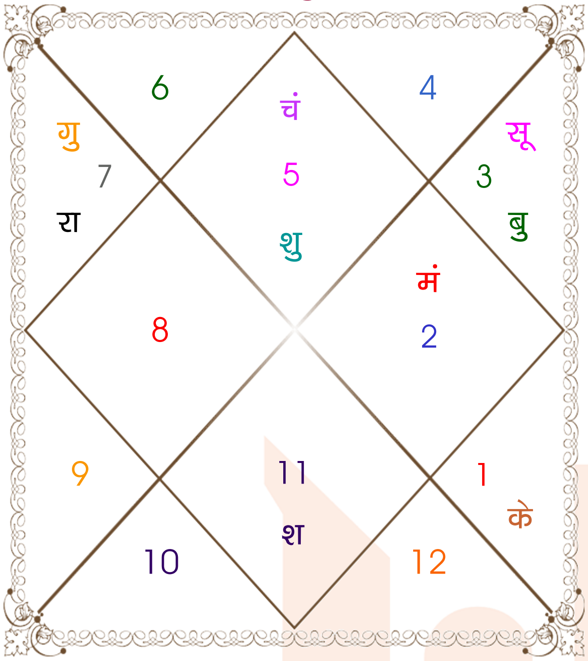

चन्द्र कुंडली

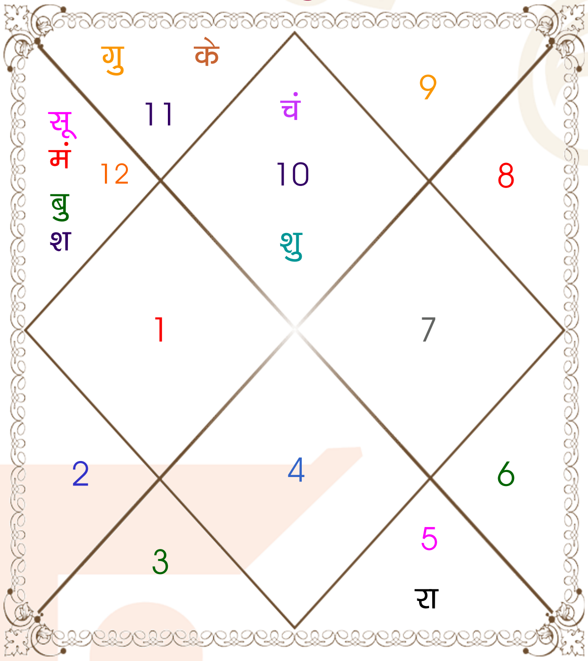

नवमांश कुंडली

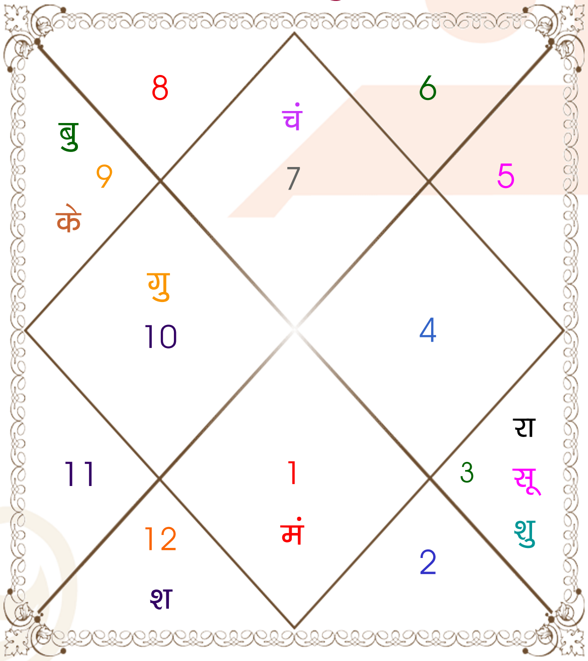

नवमांश कुंडली

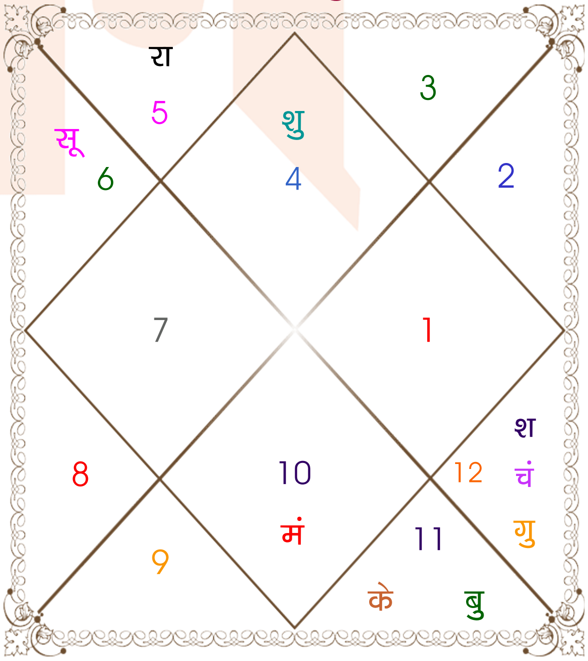

FUTUREPOINT Astro Solutions

एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 7 वर्ष 9 मास 24 दिन

के.पी. अयनांश : 23:40:37

फॉरच्युना : वृश्चिक 26:33:47

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	27:00:37	बुध	गुरु	शुक्र	सूर्य
चंद्र		सिंह	21:27:16	सूर्य	शुक्र	गुरु	चंद्र
मंगल		वृष	12:55:59	शुक्र	चंद्र	राहु	बुध
बुध		मिथु	07:32:29	बुध	राहु	राहु	शनि
गुरु		तुला	11:16:41	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र
शुक्र		सिंह	08:37:34	सूर्य	केतु	गुरु	शुक्र
शनि	व	कुंभ	18:23:42	शनि	राहु	चंद्र	राहु
राहु	व	तुला	28:14:31	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि
केतु	व	मेष	28:14:31	मंगल	सूर्य	चंद्र	शुक्र
हर्ष	व	मक	00:50:27	शनि	सूर्य	राहु	सूर्य
नेप	व	धनु	28:19:22	गुरु	सूर्य	चंद्र	शुक्र
प्लूटो	व	वृश्चि	01:44:59	मंगल	गुरु	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	तुला	02:07:08	शुक्र	मंगल	केतु	चंद्र
2	वृश्चि	00:54:59	मंगल	गुरु	मंगल	शनि
3	धनु	01:37:07	गुरु	केतु	शुक्र	राहु
4	मक	03:40:35	शनि	सूर्य	शनि	केतु
5	कुंभ	05:46:53	शनि	मंगल	चंद्र	राहु
6	मीन	05:46:25	गुरु	शनि	बुध	केतु
7	मेष	02:07:08	मंगल	केतु	शुक्र	गुरु
8	वृष	00:54:59	शुक्र	सूर्य	राहु	सूर्य
9	मिथु	01:37:07	बुध	मंगल	बुध	शनि
10	कर्क	03:40:35	चंद्र	शनि	शनि	बुध
11	सिंह	05:46:53	सूर्य	केतु	राहु	राहु
12	कन्या	05:46:25	बुध	सूर्य	बुध	शुक्र

भाव कुंडली

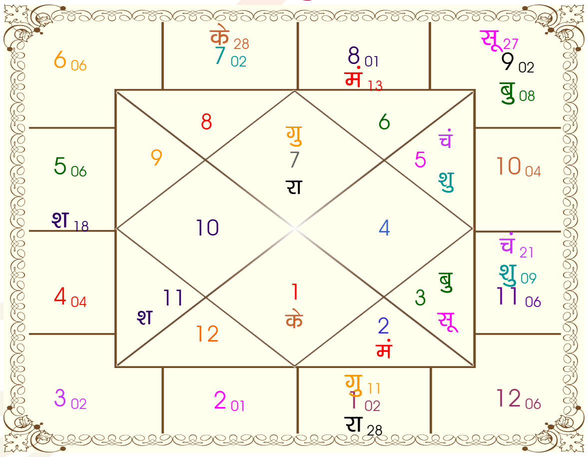

भोग्य दशा काल : सूर्य 1 वर्ष 5 मास 11 दिन

के.पी. अयनांश : 23:43:41

फॉरच्युना : कर्क 18:50:56

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	09:00:09	गुरु	शनि	शुक्र	राहु
चंद्र		मक	06:46:58	शनि	सूर्य	बुध	शनि
मंगल		मीन	20:48:49	गुरु	बुध	शुक्र	शनि
बुध		मीन	26:36:42	गुरु	बुध	गुरु	शनि
गुरु		कुंभ	17:31:21	शनि	राहु	सूर्य	चंद्र
शुक्र		मक	22:35:48	शनि	चंद्र	शुक्र	केतु
शनि		मीन	26:59:49	गुरु	बुध	गुरु	शुक्र
राहु		सिंह	16:39:55	सूर्य	शुक्र	चंद्र	गुरु
केतु		कुंभ	16:39:55	शनि	राहु	शुक्र	शनि
हर्ष		मक	17:48:43	शनि	चंद्र	बुध	बुध
नेप		मक	07:57:38	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
प्लूटो	व	वृश्चि	14:17:31	मंगल	शनि	राहु	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	21:04:07	बुध	चंद्र	शुक्र	चंद्र
2	तुला	19:36:20	शुक्र	राहु	मंगल	शनि
3	वृश्चि	20:06:41	मंगल	बुध	शुक्र	मंगल
4	धनु	21:46:12	गुरु	शुक्र	गुरु	राहु
5	मक	23:34:15	शनि	मंगल	मंगल	गुरु
6	कुंभ	23:52:47	शनि	गुरु	शनि	गुरु
7	मीन	21:04:07	गुरु	बुध	शुक्र	शनि
8	मेष	19:36:20	मंगल	शुक्र	राहु	शुक्र
9	वृष	20:06:41	शुक्र	चंद्र	केतु	गुरु
10	मिथु	21:46:12	बुध	गुरु	गुरु	राहु
11	कर्क	23:34:15	चंद्र	बुध	मंगल	गुरु
12	सिंह	23:52:47	सूर्य	शुक्र	शनि	गुरु

भाव कुंडली

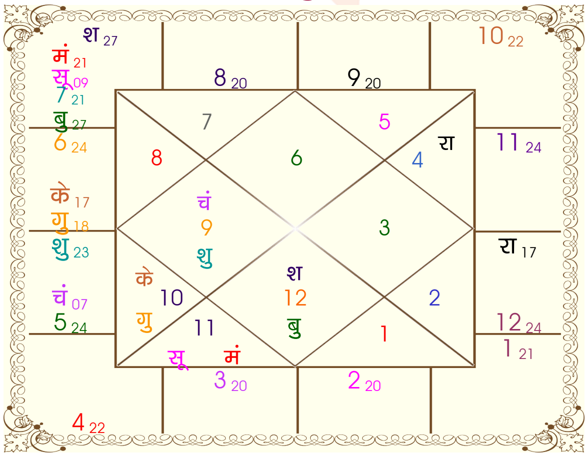

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- बुध, गुरु+ शुक्र- शनि, राहु+
2	मंगल-
3	सूर्य- गुरु- राहु-
4	शनि-
5	शनि,
6	सूर्य- गुरु- राहु-
7	मंगल- शुक्र, केतु,
8	चंद्र- मंगल, शुक्र-
9	सूर्य, बुध, केतु,
10	चंद्र- मंगल-
11	सूर्य- चंद्र+ मंगल, शुक्र, केतु-
12	बुध-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल- बुध, शनि-
2	शुक्र- राहु-
3	मंगल-
4	चंद्र, गुरु- शुक्र+ राहु,
5	सूर्य- गुरु, शनि- केतु,
6	सूर्य+ चंद्र, मंगल, शनि-
7	सूर्य, मंगल, बुध+ गुरु- शनि+
8	मंगल-
9	शुक्र- राहु-
10	मंगल- बुध, शनि-
11	चंद्र- गुरु, शुक्र- राहु, केतु,
12	सूर्य- चंद्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 3- 6- 9, 11-
चंद्र	1- 8- 10- 11+
मंगल	2- 7- 8, 10- 11,
बुध	1, 9, 12-
गुरु	1+ 3- 6-
शुक्र	1- 7, 8- 11,
शनि	1, 4- 5,
राहु	1+ 3- 6-
केतु	7, 9, 11-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	5- 6+ 7, 12-
चंद्र	4, 6, 11- 12-
मंगल	1- 3- 6, 7, 8- 10-
बुध	1, 7+ 10,
गुरु	4- 5, 7- 11,
शुक्र	2- 4+ 9- 11-
शनि	1- 5- 6- 7+ 10-
राहु	2- 4, 9- 11,
केतु	5, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	सूर्य
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	बुध

विंशोत्तरी दशा

शुक्र 7 वर्ष 11 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
13/07/1994		**06/07/2002**		**05/07/2008**	
06/07/2002		**05/07/2008**		**06/07/2018**	
	00/00/0000	सूर्य	23/10/2002	चंद्र	06/05/2009
	00/00/0000	चंद्र	24/04/2003	मंगल	05/12/2009
	00/00/0000	मंगल	30/08/2003	राहु	06/06/2011
	00/00/0000	राहु	23/07/2004	गुरु	05/10/2012
	13/07/1994	गुरु	12/05/2005	शनि	06/05/2014
गुरु	06/05/1995	शनि	24/04/2006	बुध	05/10/2015
शनि	06/07/1998	बुध	28/02/2007	केतु	05/05/2016
बुध	06/05/2001	केतु	06/07/2007	शुक्र	04/01/2018
केतु	06/07/2002	शुक्र	05/07/2008	सूर्य	06/07/2018

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
06/07/2018		**05/07/2025**		**06/07/2043**	
05/07/2025		**06/07/2043**		**06/07/2059**	
मंगल	02/12/2018	राहु	18/03/2028	गुरु	23/08/2045
राहु	20/12/2019	गुरु	11/08/2030	शनि	05/03/2048
गुरु	25/11/2020	शनि	17/06/2033	बुध	11/06/2050
शनि	04/01/2022	बुध	05/01/2036	केतु	18/05/2051
बुध	01/01/2023	केतु	22/01/2037	शुक्र	16/01/2054
केतु	30/05/2023	शुक्र	23/01/2040	सूर्य	04/11/2054
शुक्र	30/07/2024	सूर्य	17/12/2040	चंद्र	05/03/2056
सूर्य	04/12/2024	चंद्र	17/06/2042	मंगल	09/02/2057
चंद्र	05/07/2025	मंगल	06/07/2043	राहु	06/07/2059

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
06/07/2059		**06/07/2078**		**06/07/2095**	
06/07/2078		**06/07/2095**		**07/07/2102**	
शनि	09/07/2062	बुध	01/12/2080	केतु	02/12/2095
बुध	18/03/2065	केतु	29/11/2081	शुक्र	31/01/2097
केतु	27/04/2066	शुक्र	28/09/2084	सूर्य	08/06/2097
शुक्र	26/06/2069	सूर्य	05/08/2085	चंद्र	07/01/2098
सूर्य	08/06/2070	चंद्र	04/01/2087	मंगल	05/06/2098
चंद्र	08/01/2072	मंगल	02/01/2088	राहु	24/06/2099
मंगल	15/02/2073	राहु	21/07/2090	गुरु	31/05/2100
राहु	23/12/2075	गुरु	26/10/2092	शनि	10/07/2101
गुरु	06/07/2078	शनि	06/07/2095	बुध	07/07/2102

सूर्य 1 वर्ष 5 मास 28 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
23/03/1998		**20/09/1999**		**19/09/2009**	
20/09/1999		**19/09/2009**		**19/09/2016**	
	00/00/0000	चंद्र	20/07/2000	मंगल	16/02/2010
	00/00/0000	मंगल	18/02/2001	राहु	06/03/2011
	00/00/0000	राहु	20/08/2002	गुरु	10/02/2012
	00/00/0000	गुरु	20/12/2003	शनि	21/03/2013
	00/00/0000	शनि	21/07/2005	बुध	18/03/2014
	23/03/1998	बुध	20/12/2006	केतु	14/08/2014
बुध	15/05/1998	केतु	21/07/2007	शुक्र	14/10/2015
केतु	20/09/1998	शुक्र	21/03/2009	सूर्य	19/02/2016
शुक्र	20/09/1999	सूर्य	19/09/2009	चंद्र	19/09/2016

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
19/09/2016		**20/09/2034**		**20/09/2050**	
20/09/2034		**20/09/2050**		**19/09/2069**	
राहु	02/06/2019	गुरु	07/11/2036	शनि	22/09/2053
गुरु	26/10/2021	शनि	21/05/2039	बुध	02/06/2056
शनि	01/09/2024	बुध	26/08/2041	केतु	11/07/2057
बुध	21/03/2027	केतु	02/08/2042	शुक्र	10/09/2060
केतु	08/04/2028	शुक्र	02/04/2045	सूर्य	23/08/2061
शुक्र	09/04/2031	सूर्य	19/01/2046	चंद्र	24/03/2063
सूर्य	02/03/2032	चंद्र	21/05/2047	मंगल	02/05/2064
चंद्र	01/09/2033	मंगल	26/04/2048	राहु	09/03/2067
मंगल	20/09/2034	राहु	20/09/2050	गुरु	19/09/2069

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
19/09/2069		**20/09/2086**		**19/09/2093**	
20/09/2086		**19/09/2093**		**20/09/2113**	
बुध	16/02/2072	केतु	16/02/2087	शुक्र	19/01/2097
केतु	12/02/2073	शुक्र	17/04/2088	सूर्य	19/01/2098
शुक्र	14/12/2075	सूर्य	23/08/2088	चंद्र	20/09/2099
सूर्य	20/10/2076	चंद्र	24/03/2089	मंगल	20/11/2100
चंद्र	21/03/2078	मंगल	20/08/2089	राहु	21/11/2103
मंगल	18/03/2079	राहु	08/09/2090	गुरु	22/07/2106
राहु	05/10/2081	गुरु	14/08/2091	शनि	20/09/2109
गुरु	11/01/2084	शनि	22/09/2092	बुध	21/07/2112
शनि	20/09/2086	बुध	19/09/2093	केतु	20/09/2113

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
05/07/2025		18/03/2028		11/08/2030		01/09/2024		21/03/2027		08/04/2028	
18/03/2028		11/08/2030		17/06/2033		21/03/2027		08/04/2028		09/04/2031	
राहु	30/11/2025	गुरु	13/07/2028	शनि	23/01/2031	बुध	11/01/2025	केतु	13/04/2027	शुक्र	07/10/2028
गुरु	11/04/2026	शनि	28/11/2028	बुध	20/06/2031	केतु	06/03/2025	शुक्र	16/06/2027	सूर्य	01/12/2028
शनि	14/09/2026	बुध	02/04/2029	केतु	19/08/2031	शुक्र	08/08/2025	सूर्य	05/07/2027	चंद्र	03/03/2029
बुध	01/02/2027	केतु	23/05/2029	शुक्र	09/02/2032	सूर्य	24/09/2025	चंद्र	06/08/2027	मंगल	05/05/2029
केतु	30/03/2027	शुक्र	16/10/2029	सूर्य	01/04/2032	चंद्र	11/12/2025	मंगल	28/08/2027	राहु	17/10/2029
शुक्र	11/09/2027	सूर्य	29/11/2029	चंद्र	27/06/2032	मंगल	03/02/2026	राहु	25/10/2027	गुरु	12/03/2030
सूर्य	30/10/2027	चंद्र	10/02/2030	मंगल	26/08/2032	राहु	23/06/2026	गुरु	15/12/2027	शनि	01/09/2030
चंद्र	20/01/2028	मंगल	02/04/2030	राहु	29/01/2033	गुरु	25/10/2026	शनि	13/02/2028	बुध	04/02/2031
मंगल	18/03/2028	राहु	11/08/2030	गुरु	17/06/2033	शनि	21/03/2027	बुध	08/04/2028	केतु	09/04/2031

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
17/06/2033		05/01/2036		22/01/2037		09/04/2031		02/03/2032		01/09/2033	
05/01/2036		22/01/2037		23/01/2040		02/03/2032		01/09/2033		20/09/2034	
बुध	27/10/2033	केतु	27/01/2036	शुक्र	24/07/2037	सूर्य	25/04/2031	चंद्र	17/04/2032	मंगल	24/09/2033
केतु	20/12/2033	शुक्र	31/03/2036	सूर्य	17/09/2037	चंद्र	22/05/2031	मंगल	19/05/2032	राहु	20/11/2033
शुक्र	25/05/2034	सूर्य	19/04/2036	चंद्र	17/12/2037	मंगल	11/06/2031	राहु	09/08/2032	गुरु	10/01/2034
सूर्य	10/07/2034	चंद्र	21/05/2036	मंगल	19/02/2038	राहु	30/07/2031	गुरु	21/10/2032	शनि	12/03/2034
चंद्र	26/09/2034	मंगल	12/06/2036	राहु	02/08/2038	गुरु	12/09/2031	शनि	16/01/2033	बुध	05/05/2034
मंगल	19/11/2034	राहु	09/08/2036	गुरु	26/12/2038	शनि	03/11/2031	बुध	04/04/2033	केतु	28/05/2034
राहु	08/04/2035	गुरु	29/09/2036	शनि	18/06/2039	बुध	19/12/2031	केतु	05/05/2033	शुक्र	31/07/2034
गुरु	10/08/2035	शनि	29/11/2036	बुध	20/11/2039	केतु	08/01/2032	शुक्र	05/08/2033	सूर्य	19/08/2034
शनि	05/01/2036	बुध	22/01/2037	केतु	23/01/2040	शुक्र	02/03/2032	सूर्य	01/09/2033	चंद्र	20/09/2034

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
23/01/2040		17/12/2040		17/06/2042		20/09/2034		07/11/2036		21/05/2039	
17/12/2040		17/06/2042		06/07/2043		07/11/2036		21/05/2039		26/08/2041	
सूर्य	08/02/2040	चंद्र	31/01/2041	मंगल	10/07/2042	गुरु	02/01/2035	शनि	02/04/2037	बुध	15/09/2039
चंद्र	07/03/2040	मंगल	04/03/2041	राहु	05/09/2042	शनि	05/05/2035	बुध	11/08/2037	केतु	03/11/2039
मंगल	26/03/2040	राहु	25/05/2041	गुरु	26/10/2042	बुध	23/08/2035	केतु	04/10/2037	शुक्र	20/03/2040
राहु	14/05/2040	गुरु	06/08/2041	शनि	26/12/2042	केतु	08/10/2035	शुक्र	08/03/2038	सूर्य	30/04/2040
गुरु	27/06/2040	शनि	01/11/2041	बुध	19/02/2043	शुक्र	15/02/2036	सूर्य	23/04/2038	चंद्र	08/07/2040
शनि	18/08/2040	बुध	18/01/2042	केतु	13/03/2043	सूर्य	25/03/2036	चंद्र	09/07/2038	मंगल	25/08/2040
बुध	04/10/2040	केतु	19/02/2042	शुक्र	16/05/2043	चंद्र	29/05/2036	मंगल	01/09/2038	राहु	28/12/2040
केतु	23/10/2040	शुक्र	21/05/2042	सूर्य	04/06/2043	मंगल	13/07/2036	राहु	18/01/2039	गुरु	17/04/2041
शुक्र	17/12/2040	सूर्य	17/06/2042	चंद्र	06/07/2043	राहु	07/11/2036	गुरु	21/05/2039	शनि	26/08/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
06/07/2043		23/08/2045		05/03/2048		26/08/2041		02/08/2042		02/04/2045	
23/08/2045		05/03/2048		11/06/2050		02/08/2042		02/04/2045		19/01/2046	
गुरु	18/10/2043	शनि	17/01/2046	बुध	01/07/2048	केतु	15/09/2041	शुक्र	11/01/2043	सूर्य	17/04/2045
शनि	18/02/2044	बुध	28/05/2046	केतु	18/08/2048	शुक्र	11/11/2041	सूर्य	01/03/2043	चंद्र	11/05/2045
बुध	08/06/2044	केतु	21/07/2046	शुक्र	03/01/2049	सूर्य	28/11/2041	चंद्र	21/05/2043	मंगल	28/05/2045
केतु	23/07/2044	शुक्र	22/12/2046	सूर्य	13/02/2049	चंद्र	26/12/2041	मंगल	17/07/2043	राहु	11/07/2045
शुक्र	30/11/2044	सूर्य	06/02/2047	चंद्र	23/04/2049	मंगल	15/01/2042	राहु	10/12/2043	गुरु	19/08/2045
सूर्य	08/01/2045	चंद्र	24/04/2047	मंगल	11/06/2049	राहु	07/03/2042	गुरु	18/04/2044	शनि	04/10/2045
चंद्र	14/03/2045	मंगल	17/06/2047	राहु	13/10/2049	गुरु	22/04/2042	शनि	19/09/2044	बुध	14/11/2045
मंगल	28/04/2045	राहु	03/11/2047	गुरु	31/01/2050	शनि	15/06/2042	बुध	04/02/2045	केतु	01/12/2045
राहु	23/08/2045	गुरु	05/03/2048	शनि	11/06/2050	बुध	02/08/2042	केतु	02/04/2045	शुक्र	19/01/2046

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
11/06/2050		18/05/2051		16/01/2054		19/01/2046		21/05/2047		26/04/2048	
18/05/2051		16/01/2054		04/11/2054		21/05/2047		26/04/2048		20/09/2050	
केतु	01/07/2050	शुक्र	28/10/2051	सूर्य	31/01/2054	चंद्र	01/03/2046	मंगल	10/06/2047	राहु	05/09/2048
शुक्र	27/08/2050	सूर्य	15/12/2051	चंद्र	24/02/2054	मंगल	29/03/2046	राहु	31/07/2047	गुरु	30/12/2048
सूर्य	13/09/2050	चंद्र	05/03/2052	मंगल	13/03/2054	राहु	10/06/2046	गुरु	15/09/2047	शनि	18/05/2049
चंद्र	12/10/2050	मंगल	01/05/2052	राहु	26/04/2054	गुरु	14/08/2046	शनि	08/11/2047	बुध	19/09/2049
मंगल	31/10/2050	राहु	24/09/2052	गुरु	04/06/2054	शनि	30/10/2046	बुध	26/12/2047	केतु	10/11/2049
राहु	22/12/2050	गुरु	01/02/2053	शनि	20/07/2054	बुध	07/01/2047	केतु	15/01/2048	शुक्र	05/04/2050
गुरु	05/02/2051	शनि	05/07/2053	बुध	31/08/2054	केतु	05/02/2047	शुक्र	12/03/2048	सूर्य	19/05/2050
शनि	31/03/2051	बुध	20/11/2053	केतु	17/09/2054	शुक्र	27/04/2047	सूर्य	29/03/2048	चंद्र	31/07/2050
बुध	18/05/2051	केतु	16/01/2054	शुक्र	04/11/2054	सूर्य	21/05/2047	चंद्र	26/04/2048	मंगल	20/09/2050

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
04/11/2054		05/03/2056		09/02/2057		20/09/2050		22/09/2053		02/06/2056	
05/03/2056		09/02/2057		06/07/2059		22/09/2053		02/06/2056		11/07/2057	
चंद्र	15/12/2054	मंगल	25/03/2056	राहु	21/06/2057	शनि	13/03/2051	बुध	09/02/2054	केतु	25/06/2056
मंगल	12/01/2055	राहु	15/05/2056	गुरु	16/10/2057	बुध	15/08/2051	केतु	07/04/2054	शुक्र	01/09/2056
राहु	27/03/2055	गुरु	30/06/2056	शनि	04/03/2058	केतु	18/10/2051	शुक्र	18/09/2054	सूर्य	21/09/2056
गुरु	30/05/2055	शनि	23/08/2056	बुध	06/07/2058	शुक्र	19/04/2052	सूर्य	06/11/2054	चंद्र	25/10/2056
शनि	16/08/2055	बुध	10/10/2056	केतु	26/08/2058	सूर्य	12/06/2052	चंद्र	27/01/2055	मंगल	17/11/2056
बुध	24/10/2055	केतु	30/10/2056	शुक्र	19/01/2059	चंद्र	12/09/2052	मंगल	25/03/2055	राहु	17/01/2057
केतु	21/11/2055	शुक्र	26/12/2056	सूर्य	04/03/2059	मंगल	15/11/2052	राहु	20/08/2055	गुरु	12/03/2057
शुक्र	10/02/2056	सूर्य	12/01/2057	चंद्र	16/05/2059	राहु	29/04/2053	गुरु	29/12/2055	शनि	15/05/2057
सूर्य	05/03/2056	चंद्र	09/02/2057	मंगल	06/07/2059	गुरु	22/09/2053	शनि	02/06/2056	बुध	11/07/2057

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

4	मूलांक	5
7	भाग्यांक	8
1, 4, 6, 7	मित्र अंक	3, 5, 9, 8
3, 8	शत्रु अंक	2, 4,
22,31,40,49,58	शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	बुध, शुक्र
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
वृश्चिक, मेष	मित्र राशि	कन्या, तुला
मकर, मिथुन, सिंह	मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
सूर्य	अनुकूल देवता	नृसिंह
हीरा	शुभ रत्न	पन्ना
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
पन्ना	भाग्य रत्न	हीरा
रजत	शुभ धातु	कांसा
रजत	शुभ रंग	हरित
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
चावल	दान अन्न	मूँग
दूध	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - AKSHIT JAIN

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - ANU JAIN

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

AKSHIT JAIN

जीवन रत्नः	हीरा	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	पन्ना	भाग्योदय, कम खर्च
कारक रत्नः	नीलम	सन्तति सुख, सुख

ANU JAIN

जीवन रत्नः	पन्ना	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
कारक रत्नः	नीलम	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/08/1995-16/04/1998
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती प्रथम ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती तृतीय ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती प्रथम ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती तृतीय ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती प्रथम ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती तृतीय ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु व रोग
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

AKSHIT JAIN

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का ह्रास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

ANU JAIN

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	चतुष्पाद	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	नकुल	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शनि	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	19.00		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

AKSHIT JAIN का वर्ग श्वान है तथा ANU JAIN का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार AKSHIT JAIN और ANU JAIN का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

AKSHIT JAIN मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

ANU JAIN मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

AKSHIT JAIN तथा ANU JAIN में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

AKSHIT JAIN का वर्ण क्षत्रिय तथा ANU JAIN का वर्ण वैश्य है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश ANU JAIN आज्ञाकारी, सेवा करने वाली तथा विश्वासपात्र होगी। साथ ही ANU JAIN की हमेशा कम खर्च करके परिवार के लिए पैसे बचाने की आदत रहेगी ताकि जिससे ये पैसे भविष्य में काम आ सकें।

वश्य

AKSHIT JAIN का वश्य वनचर है एवं ANU JAIN का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर हमेशा चतुष्पद के लिए खतरा होता है। जब भी वनचर को मौका मिलता है वह चतुष्पद को अपना शिकार बना लेता है। वनचर AKSHIT JAIN एवं चतुष्पद ANU JAIN का विवाह अच्छा साबित होने में संदेह है। AKSHIT JAIN निर्दयी, क्रूर, वर्चस्वशाली एवं चतुर होगा तथा अपनी पत्नी को नौकरानी की भांति समझेगा। वह ANU JAIN को नीचा दिखाने का कोई अवसर नहीं चूकेगा। अक्सर वह अपनी पत्नी के साथ क्रूर व्यवहार कर सकता है तथा संभव है ANU JAIN को अक्सर उसका दुर्व्यवहार सहना पड़े।

तारा

AKSHIT JAIN की तारा अतिमित्र तथा ANU JAIN की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। AKSHIT JAIN हमेशा ANU JAIN के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

AKSHIT JAIN की योनि मूषक है तथा ANU JAIN की योनि नकुल है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से

काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में AKSHIT JAIN एवं ANU JAIN दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण AKSHIT JAIN एवं ANU JAIN के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी AKSHIT JAIN दवं ANU JAIN को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

AKSHIT JAIN का गण मनुष्य तथा ANU JAIN का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे।ं तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

AKSHIT JAIN से ANU JAIN की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा ANU JAIN से AKSHIT JAIN की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। जिसके कारण AKSHIT JAIN लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बनी रहेगी। ANU JAIN को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं तथा परिवार के सदस्यों से वैमनस्य होने की संभावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद रह सकते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए समस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने से अलगाव एवं तलाक की संभावना भी रहेगी।

नाड़ी

AKSHIT JAIN की नाड़ी मध्य है तथा ANU JAIN की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण AKSHIT JAIN एवं ANU JAIN के बीच साहचर्य, सुख एवं

समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

AKSHIT JAIN की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त सिंह तथा ANU JAIN की राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर है। नैसर्गिक रूप से आग्नि एवं पृथ्वी तत्व में असमानता तथा शत्रुता का भाव होने के कारण AKSHIT JAIN और ANU JAIN के मध्य स्वाभाविक असमानता रहेगी जिससे परस्पर संबधों में मधुरता का अभाव रहेगा। अतः यह मिलान विशेष अनुकूल नहीं रहेगा।

AKSHIT JAIN की राशि का स्वामी सूर्य तथा ANU JAIN की राशि का स्वामी शनि परस्पर शत्रुराशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से AKSHIT JAIN और ANU JAIN के मध्य अनावश्यक विवाद, वैमनस्य तथा विरोध का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करके कमियों पर विशेष ध्यान देंगे। अतः संबधों में कटुता तथा तनाव का भाव रहेगा तथा पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी। साथ ही AKSHIT JAIN के उग्र भाव से भी कभी कभी अप्रियस्थिति उत्पन्न हो सकती है।

AKSHIT JAIN और ANU JAIN की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती हैं। यह एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है। जिसका वैवाहिक जीवन पर स्पष्ट दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से ये एक दूसरे की आलोचना तथा विरोध करने में अपना अधिकांश समय करेंगे तथा समय समय पर कलह के कारण अलगाव तक की स्थिति बन सकती है या AKSHIT JAIN और ANU JAIN में से किसी एक को स्वास्थ्य संबधी परेशानी हो सकती है ।

AKSHIT JAIN का वश्य वनचर तथा ANU JAIN का वश्य जलचर है। वनचर एवं जलचर में स्वाभाविक समानता के कारण AKSHIT JAIN और ANU JAIN की अभिरूचियां समान रहेंगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर समता रहेगी। साथ ही काम संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

AKSHIT JAIN का वर्ण क्षत्रिय तथा ANU JAIN का वर्ण वैश्य है। अतः AKSHIT JAIN की प्रवृति साहसी एवं पराक्रमी कार्यो को करने में रहेगी तथा ANU JAIN धनार्जन में दक्ष रहेंगी तथा व्यापारिक बुद्धि से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी।

धन

AKSHIT JAIN का जन्म अतिमित्र तथा ANU JAIN का सम्पत नामक तारा में हुआ है। इसके प्रभाव से ANU JAIN एक धनवान तथा भाग्यशाली महिला होंगी तथा ANU JAIN के शुभ प्रभाव से उनकी आर्थिक स्थिति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर सम रहेगा। अतः स्वपरिश्रम से ही इच्छित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही मंगल का भी कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार AKSHIT JAIN और ANU JAIN आरामदायक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

AKSHIT JAIN और ANU JAIN को लाटरी, सट्टे या अन्य स्रोतों से अनायास धन

प्राप्ति की संभावना होगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधनों का वे उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरक्त वे जायदाद तथा आभूषण आदि को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

AKSHIT JAIN की नाड़ी मध्य तथा ANU JAIN की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में जन्म होने के कारण नाड़ी दोष के प्रभाव से मुक्त रहेंगे अतः गंभीर शारीरिक कष्ट से सुरक्षित रहेंगे लेकिन मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही संभोग क्रिया में भी दोनों शिथिलता तथा उदासीनता प्रदर्शन का करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन के सुख में अल्पता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त ANU JAIN के गर्भपात की भी संभावना रहेगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता करने के लिए AKSHIT JAIN और ANU JAIN दोनों को हनुमान की उपासना, मंगलवार के उपवास तथा मूंगा आदि धारण करना चाहिए। इससे अशुभ प्रभावों में न्यूनता तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से AKSHIT JAIN और ANU JAIN का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त AKSHIT JAIN और ANU JAIN के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ANU JAIN के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ANU JAIN को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ANU JAIN को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से AKSHIT JAIN और ANU JAIN सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार AKSHIT JAIN और ANU JAIN का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ANU JAIN के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य

जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद ANU JAIN अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से ANU JAIN पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि ANU JAIN अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

AKSHIT JAIN के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को AKSHIT JAIN अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी AKSHIT JAIN के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण AKSHIT JAIN के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

लग्न फल

AKSHIT JAIN

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में उच्चाभिलाषी वर्गानुसार जन्म लग्न तुला के उदय काल हुआ था। तुला नवमांश एवं तुला द्रेष्काण के उदय कालीन प्रभाव वर्गोत्तम दशा में अनेकानेक शुभ संकेतों का सृजन कर रहा है। फलस्वरुप आप आरामदायक, उच्च आनन्द प्रदायक जीवन का प्रसन्नता युक्त सुखपूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

यह सुनिश्चित है कि आप अपनी अभिरूचि के अनुसार अपनी जीवन संगिनी अर्थात् अपनी पत्नी का चयन करेंगे। आप कामुक प्राणी है। इस प्रभाव से आप अपना अधिक समय प्रेम-प्रसंग के चिंतन तथा प्रेम संबंध स्थापित करने में व्यतीत करेंगे। आप उच्च स्तर के भावुक प्राणी है। आप अपनी संगिनी को हार्दिक प्यार करते हो तथा अनुग्रहपूर्वक वासनात्मक प्रवृत्ति से व्यवहार करते हों। आप पूर्ण रूपेण अपनी संगिनी के प्रति समर्पित प्राणी हैं। यदि आपका संगिनी आपकी अभिरूचि के अनुरूप अथवा आशा के अनुकूल आचरण नहीं करती है तो दोनों के समक्ष संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। जब आप भी अपनी संगिनी को कुछ उपहार नहीं देते हो लेकिन सामंजस्य स्थापित करने के प्रति कार्यरत हो जाते हैं। आप अपने स्वाभावानुकूल उस व्यक्ति के साथ तारतम्य स्थापित कर सकेंगे, जिनकी राशि मिथुन हो अथवा कुंभ राशि में जन्म हुआ हो। आप यह निश्चित मान कर चले कि आपका मेल मीन मकर एवं कर्क राशि अर्थात् जलीय गुणयुक्त प्राणी से असंभव है।

आपका रंग रूप उत्तम एवं पूर्ण विकसित शरीर होगा। आप पूर्ण युवा शक्ति संपन्न होंगे। परिणामस्वरूप आपके मित्र संबंधित एवं व्यवसायिक मित्रों के मध्य प्रख्यात होंगे। आप पूर्णरूपेण आश्वस्त हैं कि आप अपने व्यक्तित्व का प्रयोग कर अपनी अच्छी पहचान जन सामान्य की दृष्टि में बनाकर, लाभ प्राप्ति के क्षेत्र में उच्च स्तर प्राप्त करेंगे।

फलस्वरूप आप थोक धन की आय करेंगे तथा बहुतायत में खर्च भी करेंगे। आप यदा कदा बेतुकी बात करके आनन्द प्राप्त करेंगे। आपमें विभिन्न आकर्षक विद्यमान है। आप मुक्त हस्त से धन का व्यय करते हैं। आप सदैव सहृदयता पूर्वक धन का कुछ अंश व्यय करने के लिए उद्यत रहते हैं। आप किसी भी प्रकार की करूण कथा सुन कर यदा कदा किसी को भी मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग करते हैं।

कुछ व्यक्ति आपकी इस प्रकार की उदारतापूर्ण व्यवहार एवं भाव वृद्धि को अनुपयुक्त समझकर आपको अज्ञानी समझते हैं। अतः आप इस प्रकार की उदारतापूर्ण प्रवृत्ति के प्रति अपने विचारों को मेड़ने की शिक्षा ग्रहण करें।

सभी मिला जुलाकर आप बहुत अच्छे एवं सौम्य व्यक्ति हैं। परन्तु यदा-कदा किसी भी सुअवसर पर आप अपने धैर्य की अवनति कर सकते हैं तथा आप प्रतिशोध ले सकते हैं। आपको अपनी इस प्रवृत्ति पर भली प्रकार प्रतिरोध लगाना होगा। अन्यथा आपकी छवि पर कोई कलंक लग सकता है।

आप सौभाग्यवश शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं निरोग रहेंगे। आप अपनी मध्यावस्था तक अपने शारीरिक वृद्धि की प्रवृत्ति के प्रत्ति विमुख रहें। उत्तम तो यह है कि आप अधिक भोजन पर अश्रित न रहें तथा भोजन पर नियंत्रण रखें। संप्रति आप किसी प्रकार के रोग से संक्रमित तथा अधीन हो सकते हैं। आप किडनी के रोग एवं मूत्र संबंधी रोग के प्रति सतर्क रहे। आपके लिए यह निर्देश है कि आप अपने घर पर अपने मित्रों के साथ कोई व्रण क्षत के शिकार हो सकते हैं। आपको इस बात के प्रति अनुभव अर्थात् पश्चात करना चाहिए कि बिना मित्र के सहयोग से आपके लिए दायित्व को पूरा करना सहज बात नहीं है।

आपके लिए सेवा व्यवसायों में उपयुक्त एवं प्रभावी कार्य सामाजिक जीवन का नेतृत्व अति अनुकूल प्रतीत होता है। आप गर्वनमेंट सेवक एवं अधिकारी के साथ लोक माध्यम का कार्य करें तो अच्छा है। यदि आप अनुमोदन करे तो आप स्वयं रासायनिक व्यवसाय तरल पदार्थों का व्यवसाय जैसे तेल-धृत आदि अथवा इसके अतिरिक्त आप विधिवेत्ता (वकील) अर्किटेक्ट विक्रय प्रतिनिधि, लेखक गायन वाद्य यंत्रवादक, पार्श्व गायक के साथ-साथ आप राजनीति से भी स्रोत स्थापित रख सकते हैं।

आपके लिए रंगों में उत्कृष्ट नारंगी एवं लाल रंग शुभकारक एवं भाग्यवर्द्धक है। आप पीला एवं हरे रंगों का त्याग कर दें।

आपके लिए अंको में 8 अंक उत्तम एवं धनोपार्जन अथवा धन निवेश हेतु अनुकूल है। साथ ही अंक 1, 2, 4 और 7 अंक सर्वथा अनुकूल है। परन्तु अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक आपके लिए प्रतिकूल अंक है।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन शनिवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। बुधवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

ANU JAIN

ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में कन्या लग्नोदय काल हुआ था। आपके जन्म समय पर मेदिनीय क्षितिज पर कन्या लग्न के साथ-साथ कर्क राशि का नवमांश एवं वृषभ राशीय द्रेष्काणा भी उदित हुआ था। प्रस्तुत समन्वित ज्योतिषीय प्रभाव इस विन्दु की संभावना व्यक्त करता है कि आपका जीवन एक प्रस्तर चक्र के समान शोभनीय है जो सदैव एक परत से दूसरी परत तक परिवर्तित होता रहता है। अर्थात् आप काम को बदल-बदल कर सम्पादन करती रहती हो। आपकी महत्वकांक्षा है कि आपके नाम बैंक में मोटी रकम जमा रहे। परन्तु आप अपनी महत्वकांक्षा के प्रति अनिवार्य रूप से चिन्तन करना आवश्यक नहीं समझती हैं। लेकिन आप अपनी पहुँच के बारे में अच्छी प्रकार अध्ययन नहीं कर पाती कि आखिर आपकी पहुँच कहाँ तक है।

आपकी ऐसी आदत है कि आप अपने स्तर पर अनिवार्य अधूरे कार्य को त्याग कर नये कार्य प्रभार को ग्रहण कर लेती हो। यह साहसिक कार्य आपके लिए सदैव लाभदायक नहीं

रहता है। क्योंकि आप वैद्यानिक रूप से यह निर्णय नहीं कर पाती हैं।

परन्तु प्रायः आप अस्वाभाविक रूप से बुद्धि को प्रेरित कर अपनी कार्य योजना का विकल्प की तलाश करने लगती हैं। यदि आप विशेषता पूर्वक निर्णय लेकर पूर्ण रूपेण सक्रिय हो जाएं तो आप पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगी।

आपकी दूसरी समस्या यह है कि आप अपने विचारों को अत्यनत संकट ग्रस्त मोड़ दे देती हों। इस कारण ऐसा घटित हो सकता है कि आपके मित्र अथवा व्यवसायिक सहयोगी निरन्तर आपकी कमजोरी के सम्बन्ध में सदैव आलोचना करें। इस प्रकार वे लोग आपको पूर्ण रूपेण तिरस्कृत कर दें। परिणाम स्वरूप वे लोग इस सम्बंध में प्रयास करके आपके विरूद्ध न्यायालय में आपकी त्रुटि को उजागर करे। अतः आपको धैर्य पूर्वक अपनी उस आपतिजनक गुर्राने की आदतों को सदा के लिए त्याग देना चाहिए। आपको नाना प्रकार की घरेलू विषयक दुर्बलता का भी त्याग कर देना चाहिए। अन्यथा वातावरण दुषित हो जायगा। वास्तव में आपको अत्यन्त ही आरामदायक भवन तथा पति चाहिए जो हर हालत में प्रेम सम्बंध प्रदान करते हुए आपका समर्थन एवं सहयोग करे।

आप विपरीत योनि के प्रति आकर्षित तथा सम्बंधित व्यग्रता या घबराहट उत्पन्न करने वाली रोग प्रणाली के प्रति सतर्कता बरते। ये दोनों रोग उच्चस्तरीय स्पन्दित है। यदि आप पूर्व सतर्कता नहीं बरत सके तो आप इन रोगों से ग्रसित एवं प्रभावित हो जाएंगी। आप को वृद्धावस्था की प्राप्ति होगी। आप को भोजन के अतिरिक्त शाक-सब्जी का भोज्य करने के उपरान्त सम्बंधित रोगों के भार से मुक्त हो जाएंगी।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सूआपंखी, पीला, हरा एवं सफेद रंग भाग्यशाली एवं प्रभावक हैं। कृपया काला रंग लाल एवं नीला रंगों का त्याग करें।

आपके लिए अनुकूल संभावित एवं स्पष्ट अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक है। इन तारीखों को महत्वपूर्ण समझें। अंक 1 एवं 8 अंक आपके लिए सर्वथा त्याज्य है।